पाठ्यपुस्तकों में स्त्री की छवि

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक पुस्तक मण्डल की पुस्तकें

❑ अजय कुमार

शैक्षिक पाठ्यपुस्तकों को लेकर देशभर में और विशेष रूप से हिन्दी-क्षेत्र में शिकायतें बहुत आम हैं। यह स्थिति और तब और गंभीर हो जाती है जबकि पाठ्यपुस्तकें ही शिक्षा का श्रेय और प्रेय मानी जाती है । ऐसे में पाठ्यपुस्तकों की बहुआयामी समीक्षा और विषयवस्तु-विश्लेषण की जरूरत है । प्रस्तुत है इसी दिशा में यह संक्षिप्त टिप्पणी ।

''लोकतांत्रिक व समाजवादी समाज में शिक्षा व्यक्तिगत क्षमताओं, दृष्टिकोणों तथा रुचियों से संबंधित होगी न कि लिंगभेद से । अत: ऐसे किसी भी समाज में पाठ्यक्रम में लिंग-आधारित विभाजन की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती ।''

श्रीमती हंसा मेहता की अध्यक्षता में महिला शिक्षा के लिए स्थापित कमेटी की इस सिफारिश को स्वीकार करते हुए कोठारी कमीशन ने कहा था - ''हम कक्षा 10 तक सभी विद्यार्थियों के लिए समान पाठ्यक्रम निर्मित करने का प्रस्ताव रखते हैं ।'' (कोठारी कमीशन, पृष्ठ 361)

इस सिफारिश के आधार पर बाद में एक और समिति का गठन किया गया था जिसका कार्य ऐसे दिशा निर्देश तैयार करना था जिससे पाठ्यक्रम में लिंग पर आधारित भेदभाव को दूर किया जा सके । साथ ही, ऐसे पाठों का चयन कर पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण कराना था जिनमें लिंग-भेद ना झलकता हो ।

लेकिन अनेक पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करके यह आसानी से कहा जा सकता है कि कोठारी कमीशन द्वारा लिंग आधारित भेदभाव को दूर करने का सुझाव मात्र सुझाव ही रहा है । तमाम उत्तरवर्ती प्रयत्नों के बावजूद आज भी पाठ्य-पुस्तकों में सामान्यत: स्त्री को उसकी परंपरागत छवि में ही प्रदर्शित किया जाता है।

इन पुस्तकों में स्त्री का चित्रण ज्यादातर गृहिणी के रूप में ही होता है । यदि कहीं पर उसे पुरुष के साथ दिखाया जाता है तो वहां भी वह पुरुष की सहायिका के रूप में ही नजर आती है । ऐसी पुस्तकों में स्त्री की हैसियत देखकर अलका सरावगी की यह बात ठीक प्रतीत होती है : '' औरत के लिए सारी शिक्षा का उद्देश्य वही का वही है - प्रचलित पैमाने के आधार पर एक सुयोग्य पत्नी, बहू, और मां बनना ।'' ('अपनी बेटी के लिए' लेख 'स्त्री के लिए जगह' में संकलित-सं. राज किशोर)

राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल द्वारा प्रकाशित प्राइमरी की पाठ्यपुस्तकों में भी स्त्री को लगभग इसी तयशुदा भूमिका में प्रदर्शित किया गया है । हिन्दी की कक्षा 3,4,5 की पाठ्यपुस्तकों में हमनें स्त्री/बालिका की विभिन्न पाठों में वर्णित स्थिति का जायजा लेने की कोशिश की है । हिन्दी की इन तीनों पाठ्यपुस्तकों में आई 47 कहानियों में केन्द्रीय पात्र के रूप में 25 पुरुषों के मुकाबले 5 महिलायें हैं । 11 कहानियां पशु-पक्षियों पर आधारित हैं तथा 6 कहानियों में केन्द्रीय पात्र के रूप में एक समूह है । यदि गहराई से देखें तो यह पता चलता है कि जिन कहानियों में केन्द्रीय पात्र के रूप में महिलाऐं हैं, वे वही प्रसिद्ध, परम्परागत और शायद एक लम्बे समय से पाठ्यपुस्तकों में चली आ रही ऐतिहासिक पात्र हैं, जैसे - लक्ष्मी बाई, काली बाई, पन्ना धाय आदि ।

जिस एक मात्र पाठ में वर्तमान संदर्भ है, वहां भी नजरिया परंपरावादी और आदर्शवादी है । इस पाठ में एक मां अपनी छात्रावास में पढ़ रही बेटी को पत्र लिखकर उसे बार-बार अतीत से सीख लेने की नसीहत दे रही है । देखें -

''कुछ लोग सोचते हैं - लड़कियों को अधिक पढ़ाना व्यर्थ है। उन्हें तो पराये घर जाना है । कुछ ऐसा भी कहते हैं कि लड़की अधिक पढ़ गई तो वर तलाश करने में कठिनाई होगी । तुम सोचो,

ये बात कितनी अजीब है । भला अधिक पढ़ना कहीं व्यर्थ जाता है । गार्गी और मैत्रेयी नहीं पढ़ती तो उनका नाम कैसे होता ?

शिवाजी को साहसी और पराक्रमी किसने बनाया, उनकी माता जीजाबाई ने ही न । क्या हम सीता जैसी माताओं को भुला दें ? यदि ऐसा हुआ तो लव-कुश जैसी संतान कैसे प्राप्त होगी ।

स्वस्थ और पढ़ी लिखी नारी अपने बच्चों को स्वस्थ और गुणवान बनाती है । राष्ट्र सेवा करना सिखाती है । यदि नारी असहाय रही तो कैसे काम करेगी । इन सभी कामों को करने के लिए नारी को निडर होना जरुरी है । शिक्षित होना आवश्यक है ।''

'कक्षा 3 के एक पाठ में मतदान करते हुए स्त्री का चित्र है, लेकिन इसी पाठ में पंचायत घर के चित्र में एक भी महिला नहीं है। इससे यह प्रतीत होता है कि औरत मत तो दे सकती है लेकिन निर्णय प्रक्रिया में उसका कोई योगदान नहीं है। कक्षा 4 की हिन्दी के पाठ-25 में गांधीजी की सभा के चित्र में एक भी स्त्री नहीं दिखायी दे रही ।

इसी कक्षा की एक कहानी 'आप काज महाकाज' में स्त्री को भाईयों के बीच लड़ाई का कारण बताया गया है । एक अन्य कहानी ''नाथू तोता'' और ''थावरी'' में औरत को पशुओं तथा पक्षियों से प्रेम ना करने वाली के रूप में दर्शाया गया है। यथा-

'नाथू का स्वभाव बहुत अच्छा था । वह छोटे बच्चों से बहुत प्यार करता था । उसकी झोंपडी के सामने पेड़ पौधों पर पानी के बरतन टंगे रहते थे । छोटे-मोटे जीव जन्तु और पक्षी वहां दिनभर बने रहते, शोरगुल करते और खाली समय में नाथू के चारों ओर मंडराते रहते । नाथू उनके साथ बहुत सुखी रहता था । मगर थावरी को वह शोरगुल बिल्कुल पसंद नहीं था । वह हमेशा नाथू से लडाई किया करती और कहती; ''दुनिया भर के तोते, गौरैया, कबूतर, गिलहरियां, कौए, तीतर, बटेर आदि दिनभर शोरगुल करते रहते हैं। आंगन में कुछ रखने सुखाने का भी धरम नहीं रहा । ऐसा प्रेम भी किस काम का ।''

जबकि पुरुष पात्र का इस तरह का चित्रण किसी कहानी में नहीं मिलता ।

औरत का कार्य घर की चहारदीवारी के अन्दर रहकर एक कुशल गृहणी की भूमिका निभाने का ही है । यह बात कक्षा 4 के एक पाठ 'मेरा एक सवाल' में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इसमें 'भारत माता' केवल पुरुष वर्ग-किसान, सैनिक, मजदूर और विद्यार्थी से अपने को खुशहाल रखने, रक्षा करने, पसीना बहाने तथा गौरवान्वित करने की अपेक्षा करती है । और अन्त में वह कहती है-

''हिलमिल कर सब काम करोगे
कर दोगे खुशहाल ।
सचमुच **बेटो** हल कर दोगे,
मेरे सभी सवाल ।''

इससे यह लगता है कि देश से संबंधित किसी सवाल को हल करने में जैसे औरत की कोई भूमिका नहीं है । यह उत्तरदायित्व केवल पुरुष वर्ग का ही है ।

तीनों पुस्तकों में संकलनकर्ताओं के माध्यम से कुछ पाठ दिये गए हैं, जैसे-चक्कर चप्पलों का (कक्षा 3), नागरिक की आत्मकथा (कक्षा 4) प्रगति के पथ पर (कक्षा 5) आदि । इन पाठों में वर्णनकर्ता पुरुष है जो पूरे पाठ का केन्द्र भी है । जबकि ऐसा कोई पाठ नहीं जो स्त्री के माध्यम से प्रस्तुत किया गया हो ।

इन्हीं कुछ उदाहरणों से यह परिलक्षित होता है कि पाठ्यपुस्तकों में लिंग-आधारित भेदभाव कितना गहरा है । इन पाठ्य पुस्तकों के लगभग सभी पाठ स्त्री की एकांगी भूमिका को ही प्रदर्शित करते हैं। समसामयिक समाज में स्त्री की बदलती हुई भूमिका का इन पाठ्यपुस्तकों में कोई प्रतिबिम्ब नहीं है ।

ऐसा क्यों हैं ? लिंग आधारित इस भेदभाव के कारणों की तह में जाने का यदि हम प्रयास करें तो यह स्पष्ट दृष्टिगत होता है कि इसका एक प्रमुख कारण पितृसत्तात्मक समाज है । उपरोक्त उल्लिखित तीनों पाठ्यपुस्तकों में संकलनकर्ता अधिकांश पुरुष ही हैं ।

इस संदर्भ में प्रो. कृष्ण कुमार ने लिखा है ''समाज में जिन तबकों का वर्चस्व है, वे शिक्षा और विशेषकर पाठ्यक्रम का इस्तेमाल यह सुनिश्चित करने में कर सकते हैं कि उनकी आवाजों के अलावा और सभी आवाजें इतनी नाकाफी, कमजोर या बिगड़े रूप में आऐं कि उनकी अपील नकारात्मक हो जाये ।''

(शैक्षिक ज्ञान और वर्चस्व, कृष्ण कुमार, पृष्ठ 22)

आधुनिक समाज में सैद्धांतिक रूप से स्त्री की स्थिति और सहभागिता पुरुष के समान है । यह बात आधुनिक कथानकों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया जाता है । लेकिन अक्सर इसके लिए बहुत सजगता की जरुरत है । कृष्ण कुमार के शब्दों में ही कहें तो -

''लिंग-आधारित पूर्वाग्रह वास्तव में अवचेतन में इतनी गहराई तक चला गया है कि परम्परागत विषय-वस्तु विश्लेषण उसे बाहर निकालकर प्रदर्शित नहीं कर सकता ।''

(सोशल करेक्टर ऑफ लर्निंग, पृष्ठ 16) ◆